gradeup

राजस्थान पटवारी परीक्षा हेतु

"राजस्थान इतिहास पर जीके नोट्स PDF"

राजस्थान पटवारी 2020 परीक्षा में राजस्थान राज्य के सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे जाएंगे। इस लेख में, हम राजस्थान राज्य के आधुनिक इतिहास के सामान्य ज्ञान के नोट्स अपलोड करेंगे। ये नोट्स आपको आगामी राजस्थान पटवारी परीक्षा हेतु कुशलतापूर्वक तैयारी करने में मदद करेंगे। इस लेख को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपने ज्ञान में सुधार करें।

राजस्थान का आधुनिक इतिहास (1707-1964)

रियासत

- सन् 1707 से 1947 के दौरान राजस्थान में कई छोटी-छोटी रियासतें थीं।
- कुछ महत्वपूर्ण रियासतें भरतपुर के जाट शासक, जयपुर के कछवाह शासक, अलवर के कछवाह शासक, शेखावाटी शासक, मेवाड़, कोटा, बूंदी, आदि थे।
- भरतपुर के चूडामन ने थून का किला बनवाया।
- सन् 1725 में चूडामन के भाई बदन सिंह ने दीग, कुम्हेर का जल महल और वैर दुर्ग बनवाया।
- महाराजा जवाहर सिंह ने लाहौर किले का निर्माण करवाया।
- अलवर, भरतपुर, धौलपुर, और करौली के संघीकरण से बनने वाला पहला राज्य मत्स्य संघ था। बाद में वे भारतीय संघ में शामिल हो गए।
- मिर्जा राजा सवाई सिंह ने सवाई, सरमदी राजा-ए-हिंद, राजराजेश्वर और श्री राजाधिराज की उपाधि ग्रहण की। उन्होंने दिल्ली, मथुरा, उज्जैन, वाराणसी और जयपुर में जंतर मंतर का निर्माण किया। सन् 1727 में, उन्होंने जयपुर की नींव रखी, जिसे विद्याधर भट्टाचार्य ने रूपांकित किया था।

राजस्थान का विद्रोह 1857

- 1857 के विद्रोह के दौरान जॉर्ज लॉरेंस एजेंट टू गवर्नर जनरल (AGG) था।
- 28 मई को, नसीराबाद पहला स्थान था जहां विद्रोह प्रारंभ हुआ।
- कुशल सिंह चंपावत ने एरिनपुरा में विद्रोह का नेतृत्व किया।
- राजस्थान के नसीराबाद, देवली, एरिनपुरा, कोटा, खेरवाड़ और ब्यावर में छः छावनियां थीं।
- 21 अगस्त को, विद्रोह जोधपुर क्षेत्र में पहुंच गया।
- कोटा विद्रोह का नेतृत्व मेहरब ख़ान और जदाया कयाशियों ने किया। उन्होंने 15 अक्टूबर 1857 को मेजर बार्टन, उनके दो पुत्रों और एक डॉक्टर की हत्या कर दी, जिसके लिए उन्हें 3 मार्च 1858 को फांसी दे दी गई।

राजस्थान में विद्रोह की असफलता का कारण: एकता और संगठन का अभाव, शासकों के सहयोग का अभाव, कोई निश्चित नेतृत्व नहीं, गोला-बारूद की कमी, आदि।

- महाराजा जसवंत सिंह प्रथम विद्रोह के दौरान भरतपुर के शासक थे।
- महाराजा राम सिंह द्वितीय विद्रोह के दौरान जयपुर के शासक थे।
- महाराजा तख्त सिंह विद्रोह के दौरान जोधपुर के शासक थे।

- महाराजा राम सिंह विद्रोह के दौरान कोटा के शासक थे।
- महाराजा स्वरूप सिंह विद्रोह के समय उदयपुर के शासक थे।

इस विद्रोह के कुछ प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी

- कोटा से लाला जयदयाल
- कोटा से मेहराब सिंह
- जोधपुर से ठाकुर कुशाल सिंह
- बूंदी दरबार से एक कवि के रूप में सूर्यमल्ल मीसण।
- मेवाड़ से रावत केशरी सिंह
- मेवाड़ से रावत जोधसिंह
- टोंक से तारचन पटेल

किसान एवं जनजातीय आंदोलन

किसान एवं आदिवासी आंदोलन का कारण: मराठा और पिंडारियों के आक्रमण से बचने के लिए राजाओं द्वारा ब्रिटिशों के साथ संधियों पर हस्ताक्षर किए गए। इससे राजाओं पर अतिरिक्त कर लगाया गया जो वे किसानों से संग्रहित करते हैं। इसलिए किसानों को अब दोहरे शोषण का सामना करना पड़ रहा था।

कुछ प्रसिद्ध किसान आंदोलन थे:

बिजोलिया आंदोलन (1897-1941):

- यह आंदोलन साधु सीताराम के नेतृत्व में शुरू हुआ।
- सन् 1916 में, विजयसिंह पाथिक द्वारा नेतृत्व लिया गया था।

बेगूं किसान आंदोलन (चित्तौड़गढ़, 1921)

- इसे लाग-बाग (उपकर) और बेगार (बलात श्रम) प्रणाली के खिलाफ शुरू किया गया था।
- इसका नेतृत्व रामनारायण चौधरी ने किया। बाद में विजयसिंह पथिक ने किया।

अलवर किसान आंदोलन:

- अलवर में दो किसान आंदोलन हुए।
- सुअर पालन के खिलाफ आंदोलन (1921): यह आंदोलन सूअरों की हत्या पर कड़े कानून के खिलाफ शुरू किया गया था जो किसानों की फसलों को हानि पहुंचा रहे थे।

नीमूचणा किसान आंदोलन (1923-24):

• इसे गांधीजी द्वारा जलियांवाला बाग हत्याकांड से अधिक भयानक माना जाता था। यह राजा द्वारा बढ़ाए गए कर का विरोध करने के लिए शुरू किया गया था। लगभग 800 किसान एक बैठक के लिए एकत्र हुए जिसमें अंग्रेजों ने किसानों पर गोलियां बरसानी शुरू कर दी जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए।

शेखावाटी किसान आंदोलन (1925)

• सन् 1946 में हीरालाल शास्त्री की मध्यस्थता से समाप्त हुआ।

बूंदी किसान आंदोलन (1926)

• इसे बराद किसान आंदोलन भी कहा जाता है।
• नैनूराम शर्मा ने नेतृत्व और आरंभ किया।

मेव किसान आंदोलन (1931)

• यह अलवर और भरतपुर क्षेत्र में हुआ जिसे मेवात क्षेत्र भी कहा जाता है।
• मोहम्मद अली द्वारा नेतृत्व किया गया।

कुछ प्रसिद्ध जनजातीय आंदोलन इस प्रकार हैं:

• गोविंदगिरी आंदोलन (1883)
• भील जनजाति के बैसवाड़ा और डूंगरपुर क्षेत्र में शुरू हुआ।
• सन् 1883 में, भील जनजाति के बीच राजनीतिक जागरूकता पैदा करने के लिए संप सभा की स्थापना की गई थी।
• 7 दिसंबर को, वे मानगढ़ की पहाड़ियों पर एकत्र हुए और पुलिस ने उन पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं, जिसमें 1500 आदिवासी मारे गए थे।
• हर वर्ष आश्विन शुक्ल पूर्णिमा के दिन एक मेले का आयोजन किया जाता है।

ईकी आंदोलन (1921-23):

• मोतीलाल तेजावत द्वारा नेतृत्व किया गया।
• आंदोलन के कारण उनके रीति-रिवाजों में अंग्रेजों का हस्तक्षेप, नमक, तंबाकू आदि पर अतिरिक्त कर था।

मीणा आंदोलन (1930):

• मुख्य कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा आपराधिक आदिवासी अधिनियम (1924) और जरायम पेशा कानून (1930) था, जिसमें मीणा जनजाति को आपराधिक जनजाति घोषित किया गया था।
• सन् 1952 में जरायम पेशा कानून को समाप्त कर दिया गया था।

राजस्थान में भू-राजस्व प्रणाली से संबंधित शब्द

- राज्य के प्रत्यक्ष प्रबंधन के अंतर्गत भूमि को खालसा कहा जाता था।
- सामंतवादी भूमि या प्रदान की गई भूमि को जागीर कहा जाता था।

खालसा प्रणाली में भूमि अधिकार

- बिस्वादार: यह वंशानुगत थी और भूमि पर अवितरित कब्जा किया गया क्योंकि उन्होंने कर देना जारी रखा।
- रैयतवाड़ी प्रणाली: इस प्रणाली के तहत, प्रत्येक पंजीकृत धारक को जमीन का स्वामी माना जाता है और सीधे सरकार को भुगतान करता है।
- इजार प्रणाली: इस प्रणाली के अंतर्गत एक विशेष परगना से राजस्व एकत्र करने का अधिकार नीलामी में उच्चतम बोली लगाने वाले व्यक्ति को दिया गया था।

जागीर प्रणाली में भूमि अधिकार:

- **जागीर**: यह एक सामंत को दी गई भूमि है जिसमें राज्य को हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं था।
- ईनाम या तन्ख्वाह: यह किसी व्यक्ति को वेतन के रूप में या उसके अच्छे कार्यों के लिए दिया जाता है।
- किसानों पर उत्पादन, पशु प्रजनन, सिंचाई, प्रकृति, सामाजिक उपकर इत्यादि जैसे कई उपकर लगाए गए थे।

राजस्थान के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी

मोतीलाल तेजावत:

- ईकी आंदोलन शुरू किया
- उन्हें आदिवासियों का मसीहा कहा गया।

स्वामी कुमारानंद:

- काकोरी षड्यंत्र के बाद बटुकेश्वर दत्त को शरण दी।
- किसानों को एकजुट करके योगदान दिया।

बलवंत सिंह मेहता:

- वनवासी छात्रावास के संस्थापक।

लादूराम जोशी:

- नमक आंदोलन और अगस्त क्रांति में भाग लिया।

देवीशंकर तिवारी:

- राजस्थान विश्वविद्यालय, सवाई राजा मानसिंह मेडिकल कॉलेज और महारानी कॉलेज की स्थापना में योगदान दिया।

विजय सिंह पथिक:

- वास्तविक नाम भूप सिंह गुर्जर था।
- बिजोलिया किसान आंदोलन का नेतृत्व किया।
- राजस्थान संदेश और नव संदेश उनके द्वारा शुरू किए गए थे।
- उन्होंने अजय मेरु नामक एक उपन्यास लिखा था।
- कुछ अन्य स्वतंत्रता सेनानी जुगलकिशोर चतुर्वेदी, बालमुकुंद बिस्सा, मोहनलाल सुखाड़िया, हरिदेव जोशी, अर्जुनलाल सेठी, रामनारायण चौधरी, दामोदर दास राठी, आदि थे।

स्वतंत्रता के बाद के तथ्य

- राजस्थान के प्रथम राज्यपाल श्री गुरुमुख निहाल सिंह थे।
- राजस्थान के प्रथम विधानसभा अध्यक्ष श्री नरोत्तमलाल जोशी थे।
- राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री हीरालाल शास्त्री थे।
- राजस्थान उच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश श्री कमल कान्त वर्मा थे।
- राजस्थान की प्रथम महिला मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे हैं।
- प्रथम महिला मंत्री श्रीमती कमला बेनीवाल थीं।
- प्रथम महिला राज्यपाल श्रीमती प्रतिभा पाटिल थीं।

gradeup

Gradeup Green Card

Features:

- 350+ Full-Length Mocks
- 30+SSC & Railways Exams Covered
- Tests Available in English & Hindi
- Performance Analysis & All India Rank
- Previous Year Question Papers in Mock Format
- Available on Mobile & Desktop

GET IT ON Google Play

www.gradeup.co